वह इकलौती सितारा

"गुड़िया राणी....."

रात के गहराइयों में वह आवाज़ धीमी-धीमी सी होने लगे। अचानक वह नींद से "भाई..." पुकारकर उठ गए। कुछ पुरानी यादें उसके मन में एक लम्हा केलिए बिजली के तरह चमककर गए। आज जब वह कमरे के बाहर आकर काले-आसमान के ओर देखते रहे तो उसे कुछ ओई-खोई सी लगा, लगा कि आसमान के चाँद और इकलौती सितारा उससे कुछ कह रहे हैं।

"देवु.... तुम कहाँ हो? देखो मैं तुम्हारे लिए क्या-लेकर आई हूँ!... अपने भाई के आवाज़ सुनते ही देवु आगकर चले आए और उसको गले लगाया। देवु के हाथ में कुछ पकड़ाकर आनंद ने उसे उठाया।

"यह क्या हैं भाई....?"

पाँच साल की उस मासुम के सवाल के ऊपर आनँद मुसकुराया और कहा : "अरे गुड़िया राणी... यह रंगों का बक्सा हैं... चित्र बनाने केलिए"...

देवु जल्द ही वह अलमारी में रखा और आँगन के ओर खेलने चले गए।

विकासपुर गाँव के एक छोटी-सी परिवार के हिस्सा था, देवु और आनंद। दोनों के माता-पिता गाँव में खेती-बाड़ी करके ज़िंदगी को आगे ले जाते थे। समाज के में ~~उच्च-नीच~~ ऊँचे-नीचे वर्गों के बीच में और राजनीति के दौर में झगड़ा अक्सर होते रहते थे। किसानों के तो ज़िंदगी और खेती सब इसमें डूब जाते थे।

"बेटा.... ज़रा इधर आओ..." वह किसान आँगन में आकर अपने बेटे को आवाज़ लगाई। उसके हाथ-पैर मिट्टी-माटी से भर गए थे। इस आवाज़ में एक ~~हार~~ थके हुए किसान के दयनीयता साफ-साफ सुनाई देता था। उनके आँखे कुछ अनकही-सी बातें बयान कर रहे थे, और अनके शरीर रोज़-रोटी केलिए मेहनत करनेवाले हर मज़दूरों का याद दिलाने वाला था।

"क्या हुआ पापा....?" आनंद उनके आवाज़ सुनते ही अंदर से आँगन के ओर आया।

"बेटे... सुना है कल या परसों उन सवर्ण के वर्ग लोग खेती और खेत को अपनाने को आएँगे। अब हम क्या करेंगे? कैसे जियेंगे?" उस सवाल पूछने के वक्त उनके आँखे नम पड़ गए थे, मानो कि सारे अवर्ण वर्ग या किसानों के आँसु थे वह।

"पापा... आप ही तो कहते हैं ना... भगवान हमेशा भलाई के साथ देते हैं, तो इस बार भी वही होगा।" "धीरज रखिए"... आनंद सौलह साल का लड़का था, फिर भी बेटे के बातें हमेशा उस किसान को एक छाया-सी होते थे। पूरे गाँव में आनंद एक छाया था। हमेशा गाँववालों के हाथ बढ़ाने में वह आगे था।

"खूब लड़ी मर्दानी वो
तो झानसी-वाली राणी है।"

कमरें के अंदर से देवु के आवाज़ उठने लगे, मानो, जैसे वह किसान और बेटे के मन में कुछ ताकत आई हो यह पंक्तियाँ सुनकर।

एक दिन सुबह देवु ने आसमान में एक नज़ारा देखा।

"हाय.... यह कितना सुंदर है !!! इन सात-रंगों को किसने आसमान पर इतने खूबसूरती से बनाया? हरियाली बिछी हुई है वह गाँव के ऊपर आसमान में उन सात रंगों का खूबसूरती तो और भी ज़्यादा लगने लग रहे थे।

"शाम होने तो दो... मैं आई विद्यालय से आते ही यह पूछूँगी।" शाम को जब आनंद आए, तो देवु अपने शाक के किताब उसके सामने खोला।

"भाई... आप जानते हो... आज मैंने आसमान पर एक खूबसूरत नज़ारा देखा।" बड़े कौतुहल और अपने मन के सारे यादगार थे उस नज़ारे को लेकर सब मिलाकर देवु बयान करने लगी।

"कितने अच्छे और सुंदर थे वह नज़ारा। मानो, कोई वहाँ सातवीं आसमान पर जाकर बनायी हो। सात रंगे.... उफ... बयान करने के लिए शब्द भी नहीं है। एक रंग के पीछे एक...."।

देवु आनंद के ओर देखकर कहा।

बचपन के उस मासूमियत भरी बातों में आनंद मग्न हो गए और मुसकुराकर कहा :

"अरे... मेरी गुड़िया रानी... तुम जो सात-रंग, सात-रंग जो कह रहे हो ना वह है 'इंद्रधनुष'। उन सात रंगों को ऊपरवाले ने बनाई है। तुम चाहो तो बना सकते हो।"

"मैं भी बना सकती हूँ!... पर कैसे अप्पा?"

"मैंने एक बार तुझे कुछ दिया था ना...।"

वह सुनते ही अलमारी के ओर देवु भाग गई।

"देवु... संभलकर जाओ...।" बड़े भाई के ओ छोटी-बहन से प्यार और बहन के बाते चलते रहे।

दिन बीत गए, पतझड़ के मौसम में हर पत्ते अपने जान देने लगे। हर एक पत्ता नए-पत्तों केलिए अपने ज़िंदगी देकर नए बदलाव ला लाना चाह रहे थे।

उसी वक्त ऊँचे-नीचे वर्गों के बीच का झगड़े के प्रारंभ हुआ था। एक रात ऊँचे वर्गों के कुछ लोग नीचे वर्गों के खेत में आग लगाई।

रात ही रात खेती-बाड़ी, घर आदि वे लोग चीनने और आग लगाने लगे। धर्म के नाम में में तो ~~प्रेम~~ झगड़ा था कहे तो ~~लड़ना~~ ह एक कलाप ही जन्म ले लिए था।

"हम भी यहाँ इस धरती के बच्चे हैं, हमें भी यहाँ जीने का अधिकार है।" किसानों के जुलूस के आवाज़ आनंद से शुरू हुआ था।

"यह हमारे भी मिट्टी है" नारे ~~ब~~ ऊँची आवाज़ में पुकारकर ~~+~~ किसानों के के जुलुस उनके आगे-चले।" पर जीत तो ऊँचे वर्ग के लोगों के ही हुआ। विकासपुरी के अधिकांश लोगों को अपना जान देना पड़ा। साथ वह किसान के परिवार भी...। पर वह पाँच साल की मासुम लड़की इस दुनिया में अकेला पड़ गए। अपने ज़िंदगानी शुरू होने से पहले ही खतम होने लगे।

पिछले दिन जब घर के आँगन में तीन लाश को उसके सामने लेकर आए, तो वह सब सहने की ~~उसकी~~ ताकत नहीं थे उस छोटे मन को।

जब तीसरी लाश के ओर देवु चले और वह सफेद रंग के पर्दा उठाया तो देवु के दिल में एक आग-सा लगा। मानो, जीते-जी वह मर गई हो...।

'अय्या...' एक चिल्लाहट और उस मासूम की आँसुओं के सामने सब निरालंब थे, ऊँचे वर्ग के लोग से लेकर बड़े-बड़े राजनैतिक तक।

रात के पर्दे में चलते इन कलापों को तो कोई नहीं देखते। कभी किसानों के ओर सहानुभूति बढ़ाने को तक लोग नहीं चाहते। कभी उनके ओर ध्यान तक नहीं देते। सोर किसानों के आत्महत्या तक इसी वजहों से बनते हैं। और ऐसे ही लगभग हज़ारों या करोड़ों बचपनों के ज़िंदगानी शुरू होने से ही ख़तम हो जाते हैं।

देवु को सरकारी अनाथालय में लेने का निर्णय लिया। अब पहले जैसे कोई हँसी-मज़ाक, शक कुछ भी नहीं थे उसे। कभी कुछ कहती तो "आई" नाम ही करती थी। और आई के दिया हुआ रंगों के बक्से को दिल से लगाकर सो जाते थे।

आज जब वह आसमान में 'इंद्रधनुष' को देखा तो भाई की याद आ गई। शायद इसी वजह से नींद के गहराइयों में भी "गुड़िया रानी" पुकार उसके पीछा कर रहा था।

अब इस काले आसमान में को देखकर चाँद और सितारों के बीच अ वह कुछ ढूंढ रहे थे, उसमें बस एक सितारा उसे देखकर चमचमाने लगे। आखिर उसके तलाश के जवाब वह इकलौती सितारे ने दिया, उसके भाई का रूप लेकर। बस सारे सितारे वहाँ से जाने लगे, और उस वह इकलौती सितारे को छोड़कर...